بسم الله الرحمن الرحيم

لا إله إلا الله محمد رسول الله — إن الدين عند الله الإسلام

हज़रत मुहीउद्दीन अल ख़लीफ़तुल्लाह मुनीर अहमद अज़ीम (अ स)

11 May 2018 (24 Shabaan 1439 AH)

अनुवादक : फातिमा जास्मिन सलीम
EMAIL:fjasmine14@gmail.com

जुम्मा खुतुबा

विषय:-

"इस्लाम और रमज़ान "

بسم الله الرحمن الرحيم

अपने सभी चेलों सहित सभी नए चेलों, (और दुनिया भर के सभी मुसलमानों) को शांति का अभिवादन करने के बाद हज़रत ख़लीफ़तुल्लाह (अ त ब अ) ने तशहुद ,तौज, सूरह अल फातिहा पढ़ा और फिर उन्होंने अपना उपदेश दिया : **"इस्लाम और रमज़ान "।**

अल्हमदुलिलहिल रब्बिल आलमीन, सभी प्रशंसा अल्लाह सर्वशक्तिमान पर, जो स्वर्ग और पृथ्वी का मालिक है। हम अल्लाह की कृपा से एक बार फिर से रमज़ान के महीने का स्वागत करेंगे और इंशा-अल्लाह रमज़ान का धन्य महीना १६ या १७ मई २०१८ के आसपास शुरू होगा।

हे विश्वासियों, रमज़ान एक पवित्र महीना है, जिसमें अल्लाह (स व त) ,लगातार उसके निर्माण को परखता है और मानवता को असीम आनन्द प्राप्त करने का अवसर देता है। उपवास एक पूर्ण शुद्धि है और एक जागरूकता विकसित करने का साधन है और अल्लाह की उपस्थिति की मान्यता और हर जगह उसकी अभिव्यक्ति को पाते हैं। उपवास करने वाले व्यक्ति को उपवास अनुमति देता है (यानी उपवासक) ताकि अधिक तक्वा प्राप्त कर सके और वास्तव में, तक्वा एक शैतान की सभी योजनाओं के खिलाफ है और इस दुनिया में कष्टों के खिलाफ संरक्षण करना है।

अल्लाह (स व त) हमें सूचित करता है: **और जो कोई भी अल्लाह से डरता है - वह उसके लिए रास्ता बना देगा, और उसके लिए वह वहाँ से प्रदान करेगा जहां से वह उम्मीद ही नहीं करते है। और जो कोई भी अल्लाह पर भरोसा करता है - फिर वह उसके लिए पर्याप्त है। वास्तव में, अल्लाह उसके उद्देश्य को पूरा करेगा। अल्लाह ने पहले से ही हर चीज के लिए तय कर रखा है।** (अत- तलाक़ ६५ : ३-४)।

कई मुसलमानों को आज के समय में उपवास और उपवास की गतिविधियों पर बुरी अवधारणा है। आजकल उपवासक अर्ध-शीत निद्रा (हुज़ूर ने शीत निद्रा अर्थात हाइबरनेशन के बारे में कहा है ,एक गहरी नींद, जैसे की एक विशेष जीव जो अपनी ऊर्जा बचाने के लिए उस उपवास के वक्त ज्यादा सोता है) की स्थिति में प्रवेश करना पसंद करते हैं, और उनकाअधिकांश समय सोने में खर्च करते हैं। अगर मुसलमान वास्तव में, अल्लाह के लिए उपवास रखते हैं और वे उनके निर्माता से डरते है, तो फिर वे निश्चित रूप से पवित्र कुरान पढ़ने के लिए जागृत रहेंगे और जब प्रार्थना का समय आएगा, वे प्रार्थना करेंगें और अल्लाह को याद करेंगें (ज़िक्रुँल्लाह के ज़रिये)। लेकिन कुछ ऐसे भी हैं, जो प्रार्थना के लिए उठते हैं, लेकिन उसके बाद फिर से सो जाते हैं। इस तरह दूसरी बार सोने से वे आलसी बन जाते है, और फिर वे आध्यात्मिक गतिविधियों के माध्यम से खुद को शुद्ध करने का सुनहरा अवसर खो देते हैं और पूरी तरह से इस धन्य महीने का आनंद उठाएँ। वे इस दिव्य आशीर्वाद को खो देते हैं।

रमज़ान आस्तिक के लिए तीव्र गतिविधि का समय है, जहाँ वह खुद को अस्तित्व में भोजन से संबंधित बाधाओं से छुटकारे में पाता है। इसलिए, वह और भी अधिक अल्लाह (स व त) के रास्ते में प्रयास करने

के लिए स्वतंत्र है, और ध्यान (ज़िक्र) में अधिक समय देते हैं, कर्त्तव्यातिक्ति प्रार्थना, और पवित्र कुरान को प्रचुरता से पढ़ें। वह अब अपने अहंकार को नियंत्रण कर सकता है, उसका जुनून (नफ़्स), एक समझदार व्यक्ति बन जाता है, अधिक विनम्र और लोगों पर जासूसी करने और उनके बारे में गपशप करने आदि जैसे सभी प्रकार के पाप से दूर हो जाता है इसके विपरीत, उन्हें सभी विवादों (बेकार की चर्चा, झगड़े, घृणा, ईर्ष्या, और संदेह) से दूर होने के लिए इस अवसर को जब्त करना होगा। आपको अच्छे कर्म करने में अधिक ध्यान केंद्रित करना चाहिए और अपने सभी पापों के लिए अल्लाह से माफी (इस्तिग़फ़ार) मांगनी चाहिए ताकि विधाता आपके पापों को क्षमा करेगा और आपके उपवासों और कृत्यों को स्वीकार करेगा (इबादत)।

यदि आप इस्लाम के इतिहास और रमज़ान के इतिहास को जानते हैं, तो आपको पता होना चाहिए की हमारे प्यारे पैगंबर हज़रत मुहम्मद (स अ व स) हिज़रत के बाद नौ रमज़ानों के करीब रहते थे, जहां हर रमज़ान बहुत महत्वपूर्ण फैसलों से भरा हुआ था और हमें बलिदान का और अल्लाह (स व त) को प्रस्तुत करने का एक उदाहरण दिखाया। हिज़रत के पहले वर्ष में , **पैगंबर (स अ व स) ने हमजा इब्न अब्दुल मुत्तालिब (र अ) को सैफ अल बह्र** के तीस मुसलमान घुड़सवारों के साथ ३०० कुरैश की सेना को रोकने के लिए भेजा, जो वहां मौजूद थे, मुसलमान एक लड़ाई के लिए तैयार थे लेकिन **माजिद इब्न 'अमर अल-जुहानी** जो एक व्यक्ति था, जिसके साथ दोनों पक्ष से सौहार्दपूर्ण संबंध थे, इस लड़ाई को रोक दिया, कुरैशी कबीले के मुसलमान और गैर-मुसलमान ,और इस प्रकार उन्होंने लड़ाई रोकने के लिए दोनों दलों के बीच मध्यस्थ की तरह काम किया। मदीना के पाखंडियों से संबंधित, मुसलमानों की एकता को तोड़ने के लिए उन्होंने मस्जिद (अल-दिरार) को बनवाई थी। अल्लाह के पैगंबर (स अ व स) ने अपने साथियों को रमज़ान के महीने के दौरान इस मस्जिद को नष्ट करने का आदेश दिया।

१७ रमज़ान ३ AH पर, बद्र की महान लड़ाई के माध्यम से अल्लाह ने झूठ को सच्चाई से अलग कर दिया। यह युद्ध कुरैश से ग़ैर-मुसलमानों से एक सुसज्जित सेना के खिलाफ किया गया था, जिनका लक्ष्य इस्लाम को खत्म करना था। वहाँ केवल ३१३ मुसलमान थे। लेकिन इस अंतर के बावजूद और इस्लाम की सेना में उपकरणों की कमी और कमजोरियों के बावजूद भी, अल्लाह के दूत (स अ व स) ने विजयी प्राप्त किया क्योँकि मुसलमानों को अपने विश्वास (ईमान) की रक्षा करनी थी, अल्लाह के पैगंबर (स अ व स) की रक्षा करनी थी और उनके गुरु से जुड़ने के लिए भी, अल्लाह सर्वसक्तिमान से शहादत पाने के लिए भी। अल्लाह (स व त) ने उन्हें रमज़ान के दौरान एक निर्णायक जीत दी,वह दिन जो इस्लाम के इतिहास में कोई भूल नहीं सकता।

6 AH में, **ज़ैद इब्न हरिथ (र अ)** को वादी अल-कुरा अभियान के सिर पर **फातिमा बिन राबिया** का सामना करने के लिए भेजा गया था, वह इस क्षेत्र में सबसे शक्तिशाली महिला थी, जो पहले ज़ैद (र अ) के नेतृत्व में एक कारवां पर हमला करने में कामयाब रही और मुसलमानों की संपत्ति को चुरा लिया। वह इस्लाम के लिए अपनी शत्रुता से लोकप्रसिध्द थी। रमज़ान के महीने के दौरान की लड़ाई में, मुसलमानों ने उसे मार डाला।

रमज़ान के ८ AH के अंत में, हुदैबिय्या के समझौते को तोड़ दिया गया, जबकि मुस्लिम सेनाओं ने उत्तर की दिशा में बीजान्टिनों के खिलाफ अभियान चलाया। अल्लाह के पैगंबर (स अ व स) ने उस गैर-विश्वाशी को एक घातक झटका देने की आवश्यकता महसूस की, जिसने अरब के प्रायद्वीप में शासन किया था और अंत में मक्का पर विजय प्राप्त किया। अल्लाह (स व त) ने अपनी जगह को शांति, सुरक्षा और धर्म के स्थान के रूप में पुण्यस्थान की घोषणा की है। काबा के नग्नता और घृणित कामों की सफाई करने का समय आ गया था । अल्लाह के रसूल (स अ व स) एक बहुत बड़ी सेना के प्रमुख थे , अकल्पनीय संख्या में (पहले कभी भी मक्का की विजय से पहले इस्लाम के इतिहास में नहीं देखा गया था)। उनकी ताकत बढ़ती गई (मुसलमान) जैसे-जैसे सेना मक्का के पास पहुँची। विश्वासियों का दृढ़ संकल्प, अल्लाह की इच्छा द्वारा निर्देशित किया गया, वो इतनी महान थी, की रमज़ान के २० वें को मक्का युद्ध के बिना जीत लिया गया था। यह इस्लामी इतिहास की सबसे महत्वपूर्ण तारीखों में से एक है क्योंकि यह इस विजय के बाद था, कि प्रायद्वीप में इस्लाम में दृढ़ता से लंगर डाला गया था। उसी महीने और साल में अललत , मनत और सुआ जैसी महान मूर्तियों की कई प्रतिमाएँ, और दूसरी मूर्तियों को नष्ट कर दिया गया, और यह सब कुछ रमज़ान के महीने के दौरान हुआ।

हमारे महान पैगंबर (स अ व स),सभी कठिनाइयों के बावजूद उनको उसका सामना करना पड़ा था, रमज़ान के महीने के दौरान में कई परीक्षणों का सामना करना पड़ा और उस ही समय में यह एक शुद्धि का पल था, अच्छे को प्रोत्साहित करने और बुराई को हतोत्साहित करने और जीवन के लिए लड़ने और सभी के भले के लिए । इतने कठिन समय में, जब वे इन परीक्षणों का सामना कर रहे थे, लेकिन उसके बावजूद, उन्होंने हार नहीं मानी। उन्होंने अपना उपवास रखा और अपने इबादत को पूरा किया, और उन्होंने अच्छाई को प्रोत्साहित किया, और बुराई को हतोत्साहित किया, और उन्होंने अन्य अच्छे कामों के बिना वंचित रहकर इन सभी महान कार्यों को करने का समय पाया। अल्हम्दुलिल्लाह।

पवित्र पैगंबर (स अ व स) के समय, सहाबा (साथियों) ईमानदार विश्वासी थे, जो काफिरों की धमकियों से नहीं डरते थे। वे विश्वासियों के प्रति दयालु थे और नम्र थे और उनके उपवास न केवल भूख और प्यास से पूरे हुए, लेकिन सभी सम्मानजनक कामों के साथ, जो उन्होंने रमज़ान के महीने के दौरान और इसके बाद में भी किए। यह ऐसे बलिदानों के साथ है, जिसमे वे सफल हुए हैं। इस धन्य महीने के दौरान उन्होंने संघर्ष किया है; उन्होंने आलसी कामों को नहीं किये, और उन्होंने समय को बर्बाद करने के तरीके के रूप में बिस्तर की ओर सोने के लिए अपना रास्ता नहीं निकाला। उन्होंने रमज़ान को कभी बोझ के रूप में नहीं लिया। **नहीं ! उन्होंने इस इस ढंग से कुछ भी नहीं किया।** इसके विपरीत उन्होंने सभी प्रकार के बलिदान दिए और वो किया जो अल्लाह ने उन्हें रमज़ान के महीने में करने की आज्ञा दी थी, और उन्होंने पूर्ण धर्म (इस्लाम) की भी रक्षा की। उन्होंने संघर्ष किया, अल्लाह और उसके धर्म (दीन) के लिए अपनी जान दी, और ऐसे बलिदानों के माध्यम से अल्हमदुलिल्लाह इस्लाम दुनिया के चार कोनों में फैल गया है और अब यह हमारा कर्तव्य है, की हम इस्लाम के इस सच्चे और महान शिक्षण को संरक्षित करें। हमें अपने आप को आपस में विभाजित नहीं करना चाहिए। हमें इस विभाजन को रोकना चाहिए और इसे जारी नहीं रखने देना चाहिए। इसके विपरीत, हम सभी मुस्लमान भाई हैं और जब हम

सभी बलिदानों को सुनते हैं, तो हमें एकजुट होना चाहिए और हमें इस्लाम की शिक्षाओं को बनाए रखने के लिए लड़ना चाहिए।

इसलिए,हमें अपने मतभेदों को भूल जाने देना चाहिए। मैं इस युग के खलीफातुल्लाह के रूप में, मैं आपको बताता हूं, आइए एकजुट हो जाएँ, आपस में लड़ना बंद करें, और हमें हमारे प्यारे नबी हज़रत मुहम्मद (स अ व स) के तौहीद और सुन्नत की हिफाज़त करनी चाहिए। यह दुर्भाग्यपूर्ण है, कि मुसलमान और मुसलमान एक दूसरे से लड़ रहे हैं, और हर कोई अपने भाई से गैर-मुसलमान के रूप में व्यवहार कर रहा है, उसके विश्वास का न्याय करता है और अपने मुसलमान भाई को अल्लाह के आदेश के अनुसार इस्लाम का अभ्यास करने से रोकने के लिए कानूनों को लागू करते है। सभी मुसलमानों के खिलाफ नरसंहार करते है, चाहे वो इस्लाम का कोई भी समूह हो, चाहे वह सुन्नी, शिया या अहमदी आदि हों, क्या हमें यह तय करने के लिए ईश्वर का अनुमोदन प्राप्त है, कि वो जो कहता है: **ला इलाह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूल्लुल्लाह** , क्या वो मुसलमान नहीं है?

ऐसा कैसे है, कि पाकिस्तान जैसे मुसलमान देश हैं - जिसका नाम पाक है, मतलब शुद्ध है- लेकिन दुर्भाग्य से इस देश के प्रमुख पर, वहाँ ऐसे लोग हैं, जो इस 'पाक' भूमि से वास्तव में शुद्ध नागरिकों की तरह कार्य नहीं करते, ताकि धर्म की सहिष्णुता और लोगों का विश्वास और अक़ीदा कायम हो सके। हज़रत मुहम्मद (स अ व स) और इस्लाम की बुनियादी शिक्षाओं ने भी किसी को भी इस्लाम के धर्म को स्वीकार करने के लिए मजबूर करने से मना किया है। लेकिन अहमदियों के मामले में, यह दुर्भाग्यपूर्ण है, कि मुसलमानो को उनके साथी मुस्लमान (उनके जैसे) को उसी **इस्लाम** का अभ्यास करने से रोका जा रहा है।और अब, ईशनिंदा कानून के तहत, वे अहमदी मुसलमानों को और उन सभी को गिरफ्तार कर रहे हैं ,जो धर्म की इस शाखा में उन्हें कैद करने या मारने के लिए अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का समर्थन करते हैं। वास्तव में, वे जो कर रहे हैं वो भयानक है !

मैं आपसे अपील करता हूँ : जो इस्लाम के नाम पर आपके द्वारा किए गए, गैर-इस्लामिक प्रथाओं का परित्याग करें और अल्लाह को अपना निर्णय लेने दें। आप असहमत हैं, कि ऐसे और ऐसे व्यक्ति मुसलमान हैं या नहीं? तो आप अपने हाथ और विवेक को गंदा क्यों कर रहें है? अल्लाह को अपना काम करने दो। वह बेहतरीन न्यायाधीश हैं। यह वह है, जो अच्छी तरह जानता है, कि कौन मुसलमान है या नहीं। वह अकेले ही जानता है, कि कौन उसके लिए और इस्लाम के लिए ईमानदार है।

यह दुर्भाग्यपूर्ण है, कि आप अहमदी मुसलमानों को इस्लाम का अभ्यास करने से रोकने के लिए सांसारिक साधनों का उपयोग कर रहे हैं। हाँ, मैं **इस्लाम को**, उल्लिखित करता हूं। अहमदियों का

एक ईश्वर है, वह है अल्लाह, और हमारे पैगंबर वास्तव में हज़रत मुहम्मद (स अ व स) है, और हमारी पवित्र पुस्तक वास्तव में पवित्र क़ुरान है, और हमारा शाहदा वास्तव में : **ला इलाह इल्लल्लाहु मुहम्मदर रूस्लौल्लाह** है । हमारे दिल से हमारे विश्वास को कौन मिटा सकता है? तो कौन क्या कर सकता हैं जब अल्लाह हमारा रक्षक है? अल्लाह अपने सच्चे नौकरों को अच्छी तरह जानता है, और

उसके सच्चे सेवक इस्लाम के विभिन्न समूहों में बिखरे हुए हैं, और वह दिन आ गए है, जब अल्लाह अपने अच्छे नौकरों को आगे लाने के लिए छँटाई कर रहा है, कि वे इस्लाम के गौरव को वापस ला सकें।

इतिहास खुद को दोहराता है, लेकिन केवल मैं, हमारे महान पैगंबर हज़रत मुहम्मद (स अ व स) की तरह परिपूर्ण नहीं हूं, किन्तु इसके बावजूद, अल्लाह ने मुझे छोटा मुहम्मद बनने की कोशिश करने के लिए चुना है, उनके नक्शेकदम पर चलने के लिए और एक नबी बनने योग्य के लिए - पैगंबर हज़रत मुहम्मद (स अ व स) के उम्मत के सुधारक बनकर पूरे इस्लाम और मानवता के सुधार के रूप में करें । कदापि नहीं !, कभी भी मैं मेरे गुरु हज़रत मुहम्मद (स अ व स) के टखने की ऊंचाई तक नहीं पहुंच सकता हूँ। जब अल्लाह कहता है, कि मैं एक आदम, एक दाऊद आदि, इसका तात्पर्य यह नहीं है, कि मेरी स्थिति अधिक या बेहतर है (हज़रत मुहम्मद (स अ व स) की तुलना में) या कि मैं एक और धर्म बना रहा हूं, किन्तु वह बस कहने का मतलब है, कि अल्लाह ने मुझ में इन सभी गुणों को प्रतिबिंबित किया है, उसके पैगंबर की सभी उत्कृष्टताएँ - केवल १००% नहीं - ताकि मैं ऐसा नेक काम करने में सक्षम हो सकूं (और उसके बाद की जिम्मेदारी) जिसे उन्होंने मेरे कंधों पर रखा है।

यह दुर्भाग्यपूर्ण है, कि मुस्लमान अपने (विकसित) कानूनों का उपयोग लोगों को इस्लाम का अभ्यास करने और अपनी राय व्यक्त करने से रोकते हैं। इसके बावजूद तथ्य यह है, कि भले ही **नासिर अहमद सुल्तानी** ने मुझे झूठा कहा, और यह घोषणा कि, की वह सत्यवादी थे, यह लगभग एक वर्ष से अधिक समय हो चुका था, जब से पाकिस्तानी अधिकारियों ने उन्हें गिरफ्तार किया था, और मार्च २०१७ के बाद से हमें उनकी खबर नहीं थी। खलीफतुल्ला की तरह, मैं पाकिस्तानी प्राधिकरण से उन्हें रिहा करने की अपील करता हूँ। **सावधान।** यह आप नहीं है, जो उसका न्याय कर सकते है , लेकिन यह अल्लाह का काम है। चाहे, यह सत्य है या नहीं, यह आपके लिए नहीं है, की आप उसे दंड दें या उसका सम्मान करें। यह केवल अल्लाह ही है, जो उसके साथ मामले को सुलझाएगा और उन सभी के साथ जो झूठ बोलने वालों में से हैं, जो ईश्वर से आने वाले को घोषित करने के लिए अल्लाह के नाम का इस्तेमाल करते हैं, जबकी उन्हें ऐसा करने के लिए दिव्य आज्ञा नहीं मिली है।

आप न्याय अपने हाथ में न लें, जब आपको नहीं पता की न्याय कैसे करते है, जब आप खुले दिमाग के साथ न्याय नहीं कर सकते और संबंधित पक्ष (न्याय के साथ में) को सुनें। अल्लाह श्रेष्ट में से करने वाला है; तो आप उनके विश्वास के कारण लोगों को भगाने की जल्दी में क्यों हैं? तुम्हारी तरह मुसलमानो को मारने के लिए, क्या आपने अल्लाह से कोई रहस्योद्घाटन प्राप्त किया है? **मैं दोहराता हूँ** : चलो, अल्लाह ही अपने प्राणियों के साथ होने वाले मामले को सुलझाए। वह अकेला जानता है, कि कौन सच्चा और कौन झूठा है। सच्चाई की ज़रूर जीत होनी चाहिए, इंशा-अल्लाह।

व मकारू व मकरल्लाह वल्लाहु खैरुल मकेरीं ।

और उन्होंने (यानी काफिरों ने) योजना बनाई, लेकिन अल्लाह ने योजना बनाई। और अल्लाह योजनाकारों में सबसे अच्छा है। (अल-इमरान ३ :५५)।

अब समय आ गया है, कि हम अपने भाई-बहनों के विश्वास को आंकना करना रोकें और हमारे अपने विश्वास का विश्लेषण करें, और ऐसा करने के लिए निश्चित रूप से रमज़ान का महीना उत्तम महीना / समय है। रमज़ान के इस महीने में (जो बस कोने के आसपास है), तो हम अपने भाइयों के खिलाफ जो सभी नफरत करते थे, चलिए उसे बहार निकाल लेते हैं , वह हमारे साथ वही धर्म का योगदान करते है, जो हम करते है (इस मामले में, इस्लाम)। आइए हम सब मिलकर इस धन्य महीने में प्रार्थना करें ,कि गौरवान्वित अल्लाह हमें ताकत और सफलता दे ,ताकि हम सहीह अल इस्लाम (इस प्रामाणिक इस्लाम के) में, कि इस्लाम एक बार फिर से एकीकृत और ठोस हो जाए।

अल्लाह (स व त) हमें उन लोगों के बीच बनने में मदद करें, जो इस्लाम के महान मूल्य को बढ़ाएंगे (महानता), और यह रमज़ान के दौरान और इस महीने में हम उनकी पवित्र पुस्तक (कुरान) में से सभी ७०० ईश्वरीय आज्ञाओं को उचित सम्मान और मूल्य दें, और वे क्या कहते हैं, हमें ऐसे व्यक्ति बनने में मदद करे, जो अभ्यास करते हैं। आमीन।

हे विश्वासियों, रमज़ान के इस धन्य महीने में, हमारे प्यारे और नेक पैगंबर हज़रत मुहम्मद (स अ व स) पर कई दरूद भेजें, उनके साथियों पर, उनके जैविक और हर समय के आध्यात्मिक संतानों पर ।

इंशा-अल्लाह, आमीन।